Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **17.04.15** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

दुआएं तो यदि उनका हक़ अदा करते हुए की जाएं तो क़ौमों की बिगड़ी बना देती हैं। दुआ वह हथ्यिार है जो ज़मीन व आसमान को बदल देता है। जो संकल्प शक्ति ख़ुदा तआला की ओर से इंसान को दी जाती है तथा जो सञ्पूर्ण ईमान के पश्चात पैदा होती है, उसमें और इंसानी संकल्प की शक्ति में पूरब और पश्चिम का अन्तर होता है।

तशह्हुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़र-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु एक अवसर पर दुआ का महत्व बयान फ़रमा रहे थे कि किस प्रकार दुआ के द्वारा महान कार्य किए जा सकते हैं। इसकी व्याज़्या करते हुए आपने वशीकरण शास्त्र अर्थात मिस्म्रेज़म के विषय में भी बयान फ़रमाया कि जो लोग मिस्म्रेज़म करने में अभयस्त होते हैं वे भी इस विज्ञान के द्वारा लोगों में कुछ बदलाव पैदा कर देते हैं परन्तु ये अस्थाई तथा व्यक्तिगत होती है। फिर ऐसी भी नहीं होतीं जिनके द्वारा किसी आन्दोलन की भांति लाभ प्राप्त हो रहे हों जब कि दुआएं तो यदि उनका हक़ अदा करते हुए की जाएं तो क़ौमों की बिगड़ी बना देती हैं। इस प्रकार इस संदर्भ में आपने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक घटना बयान फ़रमाई जो सूफ़ी अहमद जान से सञ्बंधित है। मैं हज़रत मुस्लेह मौऊद के शब्दों में इसका विवरण बयान करता हूँ जिसके द्वारा ज्ञात होता है कि वशीकरण शास्त्र के ज्ञान द्वारा लोगों को प्रभावित करने को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क्या महत्व देते थे? हज़रत मुस्लेह मौऊद बयान फ़रमाते हैं कि वशीकरण शास्त्र क्या है? केवल कुछ खेलों का नाम है परन्तु दुआ वह हथ्यिार है जो ज़मीन व आसमान को बदल देता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अभी दावा नहीं किया था केवल ब्राहीने अहमदिया लिखी थी कि इसकी सूफ़ियों तथा आलिमों में बड़ी ज़्याति हुई। सूफ़ी अहमद जान साहब उस ज़माने के बड़े अल्लाह वाले बुज़ुर्गों में से थे। जब उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इश्तिहार पढ़ा तो आपके साथ पत्र व्यवहार आरञ्भ कर दिया तथा आग्रह किया कि यदि कभी लुधियाना पधारें तो मुझे पहले से सूचित कर दें। संयोग वश उन्हीं दिनों हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को लुधियाना जाने का अवसर मिला। सूफ़ी अहमद जान साहब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ज़ाने पर आमन्त्रित किया। दावत के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उनके घर से वापस तशरीफ़ ला रहे थे कि सूफ़ी अहमद जान साहब भी साथ चल पड़े। रास्ते में सूफ़ी अहमद जान साहब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से निवेदन किया कि मैं ने इतने वर्षों तक रत्तर छत्तर वालों की सेवा में रहा हूँ और इसके बाद मुझे वहां से इतनी शक्ति प्राप्त हुई है कि देखिए मेरे पीछे जो व्यक्ति आ रहा है यदि में उस पर ध्यान केन्द्रित करूँ तो वह अभी गिर जाए और तड़पने लगे, अर्थात मिस्मिराईज़ करके। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम यह सुनते ही खड़े हो गए और अपनी सोटी से ज़मीन कुरेदनी शुरु की। फ़रमाया, सूफ़ी साहब यदि वह गिर जाए तो इससे आपको क्या लाभ होगा और उसको क्या लाभ होगा। क्यूंकि वास्तव में सूफ़ी साहब अल्लाह वाले लोगों में से थे। ख़ुदा तआला ने उनको दूर दृष्टि दी हुई थी इस लिए यह बात सुनते ही उनपर लीनता का प्रभाव हो गया और कहने लगे मैं आजसे इस ज्ञान से तौबा करता हूँ, मुझे मालूम हो गया है कि केवल सांसारिक बात है दीन की बात नहीं। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि यह जो मैं ने कहा कि ख़ुदा तआला ने उन्हें दूर दृष्टि प्रदान की हुई थी इसका हमारे पास एक अदभुत प्रमाण है और वह यह है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अभी ब्राहीने अहमदिया ही लिखी थी कि वे समझ गए कि यह व्यक्ति मसीह मौऊद बनने वाला है जब कि उस समय अभी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर भी यह विदित नहीं हुआ था कि आप कोई दावा करने वाले हैं। अतः उन्हीं दिनों उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को एक पत्र में यह पंक्तियां लिखीं, पहले भी मैं इन पंक्त्यिों का वर्णन कर चुका हूँ कि

हम मरीज़ों की है तुञ्हीं पे निगाह तुम मसीहा बनो ख़ुदा के लिए

तो हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि यह बात बताती है कि वे कश्फ़ वाले थे और ख़ुदा तआला ने उन्हें बता दिया था कि यह मनुष्य मसीह मौऊद बनने वाला है। वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे से पहले सिधार गए परन्तु वे अपनी

संतान को वसीय्यत कर गए कि हज़रत मिर्ज़ा साहब दावा करेंगे इन्हें मानने में देर न करना तथा उनके विषय में आगे यह परिचय भी है कि हज़रत मुस्लेह मौऊद ने लिखा है कि हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल की शादी भी उनके यहां हुई थी, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल उनके दामाद थे।

फिर मिस्म्रेज़म के विषय में एक घटना जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मज्लिस में हुआ, हज़रत मुस्लेह मौऊद ने बयान फ़रमाया कि किस प्रकार अल्लाह तआला ने अपने दूत पर मिस्म्रेज़म करने वाले को न केवल असफल किया अपितु निशान दिखाया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक बार मस्जिद मुबारक में तशरीफ़ रखते थे कि एक हिन्दु जो लाहौर के किसी दफ़तर में एकाउंटैन्ट था और मिस्म्रेज़म में बड़ा निपुण था। वह किसी बरात के साथ क़ादियान इस आश्य के साथ आया कि मिर्ज़ा साहब पर मिस्म्रेज़म के द्वारा प्रभाव डालूंगा और वे मस्जिद में बैठे नाचने लग जाएंगे। (नऊज़ु बिल्लाह) और लोगों के सामने उनकी मान हानि होगी। मैं ने निश्चय किया मिर्ज़ा साहब पर मिस्म्रेज़म के द्वारा प्रभाव डालूंगा और जब वे मस्जिद में बैठे होंगे तो उनपर ध्यान केन्द्रित करके उनके मुरीदों के सामने उनका अपमान करूंगा। अतः मैं एक शादी पर क़ादियान गया, मज्लिस लगी हुई थी और मैं ने दरवाज़े में बैठ कर मिर्ज़ा साहब पर ध्यान केन्द्रित करना आरज़्भ किया। वे कुछ उपदेश दे रहे थे (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) वह कहता है कि मैं ने उनपर ध्यान केन्द्रित किया तो उन पर कुछ भी प्रभाव न हुआ। मैं ने समझा कि इनकी इच्छा शक्ति प्रबल है इस लिए मैं ने पहले से बढ़कर ध्यान केन्द्रित करना आरज़्भ किया। परन्तु फिर भी उन पर कुछ प्रभाव न हुआ तथा वे इसी प्रकार बातों में लगे रहे। मैं ने समझा कि इनकी इच्छा शक्ति अधिक प्रबल है इस लिए मैं ने जो कुछ मेरे पास ज्ञान का भंडार था उसके द्वारा प्रयास किया तथा अपनी सारी शक्ति लगा दी। परन्तु जब मैं पूरी शक्ति लगा बैठा तो मैं ने देखा कि एक शेर मेरे सामने बैठा है और मुझ पर आक्रमण करना चाहता है। शेर को देख कर, डर कर मैं अपनी जूती उठाकर वहां से भागा। जब मैं द्वार पर पहुंचा तो मिर्ज़ा साहब ने अपने मुरीदों से कहा, देखना यह कौन व्यक्ति है? इस प्रकार एक व्यक्ति सीढ़ियों से मेरे पीछे उतरा और उसने मस्जिद के साथ वाले चौक में मुझे पकड़ लिया। मैं क्यूंकि उस समय मेरे होश उड़े हुए थे इस लिए मैं ने पकड़ने वाले से कहा कि इस समय मुझे छोड़ दो मेरा होश मेरे वश में नहीं है, मैं बाद में यह सारी बात मिर्ज़ा साहब को लिख दूंगा। अतः उसे छोड़ दिया गया और बाद में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को उसने पूरा घटना क्रम लिखा और कहा कि मुझसे धृष्टता हुई कि मैं आपकी प्रतिष्ठा को पहचान न सका इस लिए आप मुझे क्षमा कर दें।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि जो मन की शक्ति ख़ुदा तआला की ओर से इंसान को दी जाती है तथा जो सज़्पूर्ण ईमान के बाद पैदा होती है उसमें तथा इंसान की इच्छा शक्ति में पूरब और पश्चिम का अन्तर होता है। फिर एक अवसर पर यह बात बयान फ़रमाते हुए कि क़ौम की उन्नति के लिए क्या कुछ आवश्यक है तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दीन के सज़्बंध में स्वाभिमान किस सीमा तक था और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रतिष्ठा में किस स्तर का था। आप बयान फ़रमाते हैं कि-

क़ौम के उत्थान के लिए आवश्यक है कि सारे सत्य को अपने भीतर समेट लिया जाए, यह नहीं कि केवल मसीह की मृत्यु को मान लिया जाए। मसीह की वफ़ात को मानना क्यूं अनिवार्य है? हमें जो बात मसीह के जीवित रहने की धारणा से छुभती है वह यह है कि एक तो मसीह के जीवित रहने की धारणा के कारण हज़रत ईसा अलै0 की श्रेष्ठता हज़रत मुहज़्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर प्रमाणित होती है। जब कि हज़रत मुहज़्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान का कोई नबी हुआ है और न होगा। और मसीह का जीवन मान लेने के कारण मुहज़्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जिन्होंने सारे संसार का वास्तविक सुधार किया, मसीह की उच्चता प्रमाणित होती है और यह इस्लामी आस्था के विरुद्ध है।

दूसरी बात जो हमें इस मसीह के जीवन की आस्था से छुभती है वह यह है कि इसके कारण अल्लाह की तौहीद में अन्तर आता है। ये दो बातें हैं जिनके कारण हमें मसीह की मृत्यु के विषय में ज़ोर देना पड़ता है। यदि ये बातें न होतीं तो मसीह चाहे आसमान पर होते या धरती पर, हमें इससे क्या मतलब होता। परन्तु जब उनका आसमान पर चढ़ना, मुहज़्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तथा इस्लाम के अनादर का कारण बनता है और तौहीद के विरुद्ध है तो हम इस आस्था को कैसे सहन कर सकते हैं। हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को देखा है कि जब आप मसीह की मृत्यु की बात छेड़ते थे तो उस समय आप जोश के कारण कांप रहे होते थे तथा आपकी आवाज़ में इतना प्रकोप होता था कि ऐसा प्रतीत होता था कि आप मसीह के जीवन की धारणा का क़ीमा कर रहे हैं। आपकी दशा उस समय बिल्कुल बदल जाया करती थी, आप जिस समय यह तक़रीर कर रहे होते थे, आपकी आवाज़ में एक विशेष जोश नज़र आता था और ऐसा लगता था कि हज़रत मुहज़्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिंघासन पर मसीह बैठ गए हैं जिसने उनका मान सज़्मान छीन लिया है और आप उससे मुहज़्मद रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सिंघासन वापस लेना चाहते हैं। अतः यह था स्वाभिमान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का।

फिर जब अल्लाह तआला किसी को किसी उच्च स्तर पर खड़ा करता है तो ऐसे लोगों के विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का बयान है कि किस प्रकार अल्लाह तआला उनका मार्ग दर्शन करता है और किस प्रकार लोगों के विषय में उन लोगों की भीतरी दशा भी उन पर ज़ाहिर कर देता है। इसके सम्बंध में हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि जब इंसान ऐसे स्तर पर खड़ा हो जाए कि अर्थात उच्च पद पर, जिसको अल्लाह तआला ने स्वंय खड़ा किया हो तो फिर अल्लाह तआला की ओर से अपने आप मार्ग दर्शन होता चला जाता है और उसको ऐसी गुप्त हिदायत मिलती है जिसे इल्हाम भी नहीं कह सकते तथा जिसके विषय में हम यह भी नहीं कह सकते कि वह इल्हाम से अलग बात है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि बहुत से लोग जब मेरे सामने आते हैं तो उनके अन्दर से मुझे ऐसी किरणें निकलती दिखती हैं जिनके कारण मुझे संज्ञान मिल जाता है कि उनके भीतर ऐसी ऐसी कमियां अथवा ऐसे ऐसे गुण हैं परन्तु यह अनुमति नहीं होती कि उन्हें इन बातों को बताया जाए। अल्लाह तआला का यही तरीक़ा है कि जब तक इंसान अपनी मानसिकता को स्वंय ज़ाहिर नहीं कर देता, वह उसे अपराधी नहीं कहता। इस लिए इस तरीक़े के अंतर्गत नबियों तथा उनकी छवि वाले लागों का भी यही तरीक़ा है कि वे उस समय तक किसी व्यक्ति के भीतरी दोष का वर्णन नहीं करते जब तक वह अपने अवगुण को आप प्रकट न कर दे। अतः 1904 में जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लाहौर तशरीफ़ ले गए तो वहां एक जलसे में आपने तक़रीर फ़रमाई। एक ग़ैर अहमदी दोस्त शेख़ रहमतुल्लाह साहब वकील भी उस जलसे में उपस्थित थे। वे कहते हैं कि तक़रीर के बीच में मैं ने देखा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सिर से नूर का एक स्तंभ निकल कर आकाश की ओर जा रहा था। उस समय मेरे साथ एक अन्य दोस्त भी बैठे हुए थे तो मैं ने उन्हें कहा कि देखो वह क्या चीज़ है? उन्होंने तुरन्त कहा कि यह तो प्रकाश स्तंभ है जो हज़रत मिर्ज़ा साहब के सिर से निकल कर आसमान तक पहुंचा हुआ है। इस दृश्य का शेख़ रहमतुल्लाह साहब पर ऐसा प्रभाव हुआ कि उन्होंने उसी दिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत कर ली।

ये ऐसे निशान हैं जिनको देख कर लोगों ने ईमान प्राप्त किया और फिर यही नहीं, निशानों की विभिन्न अवस्थाएं हैं जो अल्लाह तआला लोगों पर अब तक प्रकट फ़रमाता चला जा रहा है जैसे कि एक जुज़्अः पहले मैं ने ख़ुत्बे में कुछ ताज़ा घटनाएं भी बयान की थीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक मज्लिस की घटना बयान फ़रमाते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि मुझे याद है एक दोस्त ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में लिखा कि मेरी बहिन के पास जिन आते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनको लिखा कि आप उन जिनों को यह पैग़ाम पहुंचा दें कि एक महिला को क्यूं सताते हो। यदि सताना ही है तो मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी या मौलवी सनाउल्लाह साहब को जाकर सताएं। एक ग़रीब औरत को तंग करने से क्या लाभ?

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के निशान तथा चमत्कारों के सम्बंध में हज़रत मुस्लेह मौऊद ने बयान फ़रमाया है। उनमें से कुछ वृत्तांत पेश करता हूँ। उदाहरणतः मैं एक साहब अब्दुल करीम नामक की घटना पेश करता हूँ। वे क़ादियान के एक स्कूल में पढ़ा करते थे। संयोग वश उन्हें एक कुत्ते ने काट लिया। इस कारण उन्हें इलाज के लिए कसौली भेजा गया तथा उनका उनका उपचार प्रत्यक्षतः सफल रहा। परन्तु वापस आने के कुछ दिन पश्चात उन्हें बीमारी का दौरा पड़ गया। जिस पर कसौली टेलीग्राम दिया गया कि कोई इलाज बताया जाए। परन्तु जवाब आया कि Nothing can be done for Abdul karim. अर्थात खेद है कि अब्दुल करीम का कोई इलाज नहीं हो सकता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को उनकी बीमारी के विषय में सूचित किया गया। आपने उनके स्वस्थ होने के लिए विशेष रूप से दुआ फ़रमाई। उस दुआ का यह परिणाम हुआ कि अल्लाह तआला ने उनकी बीमारी का दौरा होने के पश्चात अल्लाह तआला ने उनकी बीमारी को दूर कर दिया। इससे प्रमाणित हुआ कि इस प्रकृतिक नियम के ऊपर एक हस्ती पूर्ण अधिकार रखती है जिसके हाथ में स्वास्थय की शक्ति है। फिर आप एक घटना बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास एक बार अमरीका से दो पुरुष और एक महिला आई। एक पुरुष ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से आपके दावे के विषय में बात चीत की। वार्ता की बीच हज़रत मसीह नासिरी का वर्णन आ गया। उस व्यक्ति ने कहा वे तो ख़ुदा थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि उनके ख़ुदा होने का तुम्हारे पास क्या प्रमाण है? उसने कहा कि उन्होंने चमत्कार दिखाए हैं। आपने कहा कि चमत्कार तो हम भी दिखलाते हैं। उसने कहा मुझे कोई चमत्कार दिखलाएं। आपने फ़रमाया कि स्वंय तुम मेरा चमत्कार हो। यह सुन कर वह चकित सा हो गया और कहने लगा कि मैं किस प्रकार चमत्कार हूँ। आपने कहा कि क़ादियान एक बहुत छोटा सा तथा अविज़्यात गाँव था। छोटी से छोटी खाने की चीज़ भी

यहां नहीं मिल सकती थी यहां तक कि एक रुपए का आटा भी नहीं मिल सकता था और यदि किसी को आवश्यकता होती थी तो गेहूँ लेकर पिसवाता था। उस समय मुझे ख़ुदा तआला ने सूचना दी थी कि मैं तेरे नाम को दुनिया में बुलन्द करूंगा तथा सारी दुनिया में तुम ज़्याति पाओगे। चारों ओर से लोग तेरे पास आएंगे और उनकी सेवा एंव सुविधा के सामान भी यहां आ जाएंगे। يَّأْتُونَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ और हर प्रकार के तथा हर देश के लोग तेरे पास आएंगे। يَّأْتِيْكَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ और इतनी संज़्या में आएंगे कि जिन रास्तों से वे आएंगे वे रास्ते अमीक़ हो जाएंगे, गहरे हो जाएंगे। अब देख लो कि रास्ते कितने अमीक़ हो गए हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लिखा है कि मेरी सत्यता के लिए लाखों निशान दिखलाए गए परन्तु मैं तो कहता हूँ कि इतने निशान दिखलाए गए जो गिने भी नहीं जा सकते परन्तु फिर भी अनेक नादान ऐसे हैं जो कहते हैं कि इतने तो मिर्ज़ा साहब के इल्हाम भी नहीं फिर निशान इतने अधिक किस प्रकार हो गए। परन्तु बुद्धिमान लोग भली भांति जानते हैं कि लाखों निशान तो एक इल्हाम के द्वारा भी प्रकट हो सकते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि मेरी सच्चाई के ख़ुदा तआला ने लाखों निशान दिखलाए हैं यह बिल्कुल ठीक बात है और इसमें हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि मैं तो कहता हूँ कि आपकी सत्यता के ख़ुदा तआला ने इतने निशान दिखलाए हैं जिनकी गणना भी नहीं की जा सकती, परन्तु किन के लिए? ये निशान जो दिखलाए हैं किन के लिए हैं, उन्हीं के लिए जो बुद्धि रखते हैं।

आज भी क़ादियान की उन्नति इस बात का प्रमाण है। आज भी लोग क़ादियान जाते हैं तो इस लिए जाते हैं कि वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बस्ती है। इस लिए नहीं जाते कि एक शहर है और अन्य शहरों की भांति इसकी जन संज़्या बढ़ रही है और प्रगति कर रहा है अथवा फैल गया है, शहर। वहां के व्यवसायी आज भी इस आशा पर बैठे होते हैं कि यहां जलसा होगा जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जारी किया हुआ है। तो हमारे कारोबार भी चमकेंगे तो ये उन्नतियां आर्थिक दृष्टि से भी, अन्य लोगों के लिए भी आज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कारण हो रही हैं इस नगर में। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावा करने पर लोग आपके पास आए तथा उन लोगों ने भी लाभ प्राप्त कर लिया और لا يشقى جليسهم के कारण भी उनको वरदान मिल गया। तो ये सब आपकी सच्चाई के निशान हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि मुझे ख़ूब याद है कि एक मौलवी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास आया और कहने लगा, मैं आपका कोई निशान देखने आया हूँ। आप हंस पड़े और फ़रमाया कि मियां तुम मेरी किताब हक़ीक़तुल वही देख लो, तुझें मालूम होगा कि ख़ुदा तआला ने मेरे समर्थन में कितने अधिक निशान दिखाए हैं। तुमने उनसे क्या लाभ पाया है कि और अधिक निशान देखने आए हो।

अतः उस व्यक्ति ने दो मिन्ट या पाँच मिन्ट में पूरी होने वाली दो चार भविष्य वाणियां भी पेश की होतीं तो हम दो साल क्या उसकी दो सौ साल वाली भविष्य वाणी भी मान लेते और कहते कि जब हमने दो तीन अथवा पाँच मिन्ट में पूरी होने वाली भविष्य वाणियां देखी हैं तो ये लज़्बी अवधि वाली भविष्य वाणियां भी अवश्य पूरी होंगी। परन्तु यदि कोई मनुष्य इस प्रकार की भविष्य वाणियां दिखाए बिना लज़्बी अवधि वाली भविष्य वाणियां करे तो हम कहेंगे कि यह बात बुद्धि के विरुद्ध है। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पेशगोइयां तो आपके जीवन में पूरी हुईं और आज तक पूरी हो रही हैं। जैसा कि मैं ने कहा कि जमाअत की दिन प्रतिदिन प्रगति इस बात का प्रमाण है, सबूत है।

अल्लाह तआला इन पेशगोइयों के पूरा होने, जिस प्रकार हो रही हैं, इनको दिखाई न देने वालों को भी दिव्य नेत्र प्रदान करे कि वे इनको देखें और अल्लाह तआला हमें भी हर क्षण अपने ईमान में मज़बूत से मज़बूत करता चला जाए।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwer Ayyadahullhu Ta'la 17.04.2015

सैय्यदना हुज़ूर अनवर की मंज़ूरी से मजलिस अन्सारुल्लाह भारत दिनांक 25 जौलाई से 15 अक्तूबर 2015 तक अपनी डायमंड जुबली मना रही है।

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*